स्वतंत्रोत्तर भारत के आर्थिक विकास में प्राचीन अवधारणाओं की प्रासंगिकता

अयाज करीम*

राष्ट्र, क्षेत्र और व्यक्तियों की आर्थिक समृद्धि के वृद्धि को आर्थिक विकास कहते हैं। नीति निर्माण की दृष्टि से आर्थिक विकास उन सभी प्रयत्नों को कहते हैं जिनका लक्ष्य किसी जन समुदाय की आर्थिक स्थिति और जन–जीवन के सुधार के लिए अपनाये जाते हैं।वर्त्तमान युग की सबसे महत्वपूर्ण समस्या आर्थिक विकास की समस्या है । आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनैतिक स्वतंत्रता का कोई महत्व या उपयोग नहीं है। विकास एवं उनसे जुड़े मुद्दों के इस महत्व के कारण ही अर्थशास्त्र के क्षेत्रमें ''विकास–अर्थशास्त्र'' नामक एक अलग विषय का ही उदय हो गया।

भारत में आर्थिक विकास सिंधुघाटी सभ्यता अर्थात् हड़प्पा सभ्यता से आरंभ माना जाता है। सिंधुघाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से व्यापार पर आधारित प्रतीत होती है, जो यातायात में प्रगति के आधार पर समझी जा सकती है। लगभग 600 ई0 पू0 महाजनपदों मे विशेष रूप से चिन्हित सिक्कों को ढ़ालना आरंभ कर दिया था। इस समय को गहन व्यापारिक गतिविधि एवं नगरीय विकास के रूप में चिन्हित किया जाता है। 300ई0 पू0 से मौर्यकाल ने भारतीय उपमहाद्वीप का एकीकरण किया।

राजनैतिक एकीकरण एवं सैन्य सुरक्षा ने कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ–साथ व्यापार एवं वाणिज्य से सामान्य आर्थिक प्रणाली को बढ़ावा मिला। अगले 1500 वर्षो में भारत में राष्ट्रकूट होयसत्ता और पश्चिमी गंगा जैसे प्रतिष्ठित सभ्यताओं का विकास हुआ। इस अवधि के दौरान भारत को प्राचीन एवं 17वीं सदी तक के मध्य युगीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में विवरण प्रस्तुत मिलता है। इसमें विश्व के कूल सम्पत्ति का एक–तिहाई से एक–चौथाई भाग मराठा साम्राज्य के पास था, इनमें यूरोपीय उपनिवेशवाद के दौरान तेजी से गिरावट आई।

आर्थिक इतिहासकार अगंस मैडीसन की पुस्तक ''द वर्ल्ड इकॉनमी ए मिलेनियम परस्पैक्टिव'' के अनुसार भारत विश्व का सबसे धनी देश था और 17वीं सदी तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था। भारत में इसके स्वतंत्र इतिहास में केन्द्रीय नियोजन का अनुसरण किया गया है, जिसमें सार्वजनिक स्वामित्व, विनियमन, लाल फीताशाही और व्यापार अवरोध विस्तृत रूप से शामिल है। 1991

***शोध छात्र, इतिहास विभाग भू0ना0मंडल विश्वविद्यालय, मधेपूरा (बिहार)**

ई0 के आर्थिक संकट के बाद केन्द्र सरकार ने आर्थिक उदारीकरण की नीति आरंभ कर दी। भारत आर्थिक उदारीकरण को बढ़ावा देने लगा था और विश्व की तेजी से बढ़ती आर्थिक अर्थव्यवस्था में से एक बनकर उभरा।

स्वतंत्रताके बाद भारत की आर्थिक विकास के लिए समाजवादी आर्थिक नीतियों का अनुसरण किया गया। कई क्षेत्रों में तो भारत सरकार का एकमात्र अधिकार था।स्वतंत्रता के उपरांत तीन दशकों तक भारत केप्रतिव्यक्ति आय केवल 1प्रति वर्ष की दर से बढ़ी। 1980ई0 के दशक के मध्य से भारत ने अपने बाजार को धीरे–धीरे खोलना आरंभ किया और आर्थिक किया और आर्थिक उदारवाद के मार्ग पर चल निकला। 1990 ई0 के पश्चात् और भी अधिक मूल भूत आर्थिक सुधार हुए। सन् 2000ई0 के बाद आर्थिक सुधारों को और गति दी गई तब भारत मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था की दिशा में बहुत आगे निकल गया है।

आर्थिक विकास की अवधारणा और इसके कारकों का निर्धरण :–

आर्थिक विकास के रूप में देखा जा सकता है कुल आपूर्ति की गतिशीलता या और अधिक ठीक से लम्बी अवधि के पहलू इस मुद्दे के सम्भावित तत्व है। आर्थिक विकास के तहत आम तौर पर समझा जाता है विकास के रूप में अच्छी तरह से अर्थव्यवस्था का संचालन जिसमें जी0डी0पी0 या एल0पी0 में वास्तविक आय में वृद्धि में व्यक्ति का वास्तविक आय कैसा हो।

आर्थिक विकास के मॉडल में समाज संसाधन उत्पादन और प्राद्यौगिकी के मेल से लागत में वृद्धि की जाती है। आर्थिक सुधार के माध्यम से जन कल्याण की बातों को सुचारू रूप से चलाया जा सकता है। अक्सर आर्थिक विकास के कारकों में आर्थिक वृद्धि का मुख्य रूप से योगदान है, जिसके आधार पर जन कल्याणकारी कार्य किया जा सकता है। आर्थिक विकास में तकनीकी प्रगति, पैमाने की अर्थव्यवस्था, शैक्षणिक वृद्धि, पेशेवर एवं स्तरीय कर्मचारियों की वृद्धि, गतिशीलता में वृद्धि और प्रबंधन की आवश्यकता है। आर्थिक विकास में प्रबंध की बहुत अधिक आवश्यकता है, क्योंकि गुणात्मक उत्पादन से ही आर्थिक विकास का मार्ग सुचारू किया जा सकता है। आर्थिक विकास की अवधारणा विस्तृत अवधरणा है, आर्थिक विकास से आशय अर्थव्यवस्था में आर्थिक वृद्धि के अतिरिक्त कुछ अन्य क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन से है। दुसरे शब्दों में अगर कहा जाय तो आर्थिक विकास का अर्थ आर्थिक वृद्धि तथा साथ ही साथ राष्ट्रीय आय के विवरण से है। क्योंकि आर्थिक वृद्धि आर्थिक विकास नहीं है इसमें यह देखा जाता है कि एक देश में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि के फलस्वरूप उस देश के नागरिकों के रहन–सहन के स्तर में वृद्धि हुई है या नहीं। आर्थिक विकास के समय गरीबी, प्रति व्यक्ति आय, बेरोजगारी इत्यादि में क्या–क्या परिवर्तन हुए है। जैसे किसी देश के द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि दर

की समान या उससे अधिक दर से जनसंख्या में कितनी वृद्धि हुई है। इस स्थिति में कुल उत्पादन तो बढ़ा लेकिन लोगों के औसत रहन–सहन के स्तर में कोई परिवर्तन नहीं आया। इस प्रकार यदि प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि के साथ साथ की असमानताएं भी बढ़ी हो तो इसका मतलब आर्थिक वृद्धि के लाभ समान रूप से नहीं करें।

आर्थिक विकास की विशेषताओं का अगर हम विवेचना करें तो आर्थिक विकास एक सतत प्रक्रिया है जिसमें विकास के विभिन्न अंग एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। जैसे कृषि के बाद उद्योग और सेवाओं का विकास की यह प्रक्रिया नवीन उत्पादन तकनीक बड़े पैमाने का उत्पादन तथा साधनों में परिवर्तन द्वारा दीर्घकाल में राष्ट्रीय आय की वृद्धि में सहायक हो। देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि उसके विकास का सूचक होती है। यहाँ राष्ट्रीय आय से आशय उस आय से है जो सूचकांको के आधर पर संशोधित कर दी जाती है। आर्थिक विकास उसी दशा में माना जाता है जबकि प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में वृद्धि समय विशेष से संबंधित न होकर दीर्घकाल तक निरंतर होती है। राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा धनी वर्ग को मिलता है तो आर्थिक विकास सार्थक होता है।

आर्थिक विकास के कारक :–किसी देश की अर्थव्यवस्था में किसी समय अवधि में होने वाली उत्पादन क्षमता और वास्तविक आय की वृद्धि आर्थिक समृद्धि कहलाती है। अर्थात् किसी अर्थव्यवस्था में सकल राष्ट्रीय उत्पाद, सकल घरेलू उत्पादक एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि। आर्थिक विकास एक व्यक्तिनिष्ठ अवधारणा है जो गुणात्मक परिवर्तन से जुड़ा है।

भारतीय योजना आयोग के अनुसार अल्पविकसित देश वहहै जिसमें एक ओर तो मानव शक्ति की क्षमता का बहुत कम उपयोग होता है वहीं दुसरी ओर प्राकृतिक संसाधनों का भी पुरा प्रयोग नहीं हो पा रहा हो। विकसित देशों की तुलना में अल्प विकसित देशों में मानव पूंजी भी बहुत कम विकसित है जहां संयुक्त राज्य अमेरिका में साक्षरता का स्तर 94 प्रतिशत है वहीं भारत में केवल 74 प्रतिशत ही है।

कारक :–

1) किसी भी देश की आर्थिक विकास में आर्थिक कारकों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
2) हैराड–डोमर मॉडल में पूंजी को आर्थिक संबंध में निर्णायक भूमिका दी जाती है। अर्थव्यवस्था चाहें जिस प्रकार की हो, आर्थिक विकास की गति तेज रखने के लिए पूंजी निर्माण की दर उँची रखनी होगी।
3) अन्य कारकों में कृषि, विदेश व्यापार, आर्थिक प्रणाली इत्यादि का होना आवश्यक है।
4) आर्थिक विकास की प्रक्रिया में अनार्थिक कारक भी महत्वपूर्ण है जिसमें मानव संस्थान, शिक्षा, भ्रष्टाचार से मुक्त विकास की आकांक्षा है।

5) अल्पविकसित देशों में यदि गरीबी के दुष्यचक्र से छुटकारा पाना है तो उसके लिए ''सबल प्रयास'' आवश्यक होगा। जिसमें निवेश की मात्रा अधिक होनी चाहिए।

आज भारत की स्वतंत्रता के बाद अभी उसकी आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अधिक से अधिक भारतीय अवधारणाओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। स्वतंत्रा भारत के बाद भारतीय आर्थिक विकास में अवधारणाओं और मान्यताओं का अहम भूमिका रही है। वर्त्तमान भारतीय आर्थिक पॉलिसी का जो निर्माण किया जा रहा है वह भारतीय अर्थव्यवस्था को और अधिक उंचाई तकले जाएगा।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्राता प्राप्ति के पश्चात् भारत जिस आर्थिक दिशा को तय कर रहा है यह व्यवस्था पूर्णतः नवीन व्यवस्था नहीं है, बल्कि इस व्यवस्था में प्राचीन आर्थिक व्यवस्था का मुख्यतः या अंशतः मिश्रण है। फिर चाहे कृषि हो या वाणिज्य व्यापार हर क्षेत्रा में प्राचीन मान्यताओं को तरजीद दी जाती है। प्राचीन और आधुनिक आर्थिक विकास में यदि देखा जाए तो इसमें सबसे बड़ा अन्तर यह है कि प्राचीन काल में राज्य का कार्य जहां सुरक्षा व्यवस्था तक ही सीमित था जिसके कारण वित्तीय व्यवस्था का महत्व सीमित था उस समय यह प्रचलित धरणा थी कि सबसे अच्छी सरकार वही जो कम से कम कर लगावे और कम से कम सार्वजनिक व्यय करें। वहीं आधुनिक कार्य अर्थात् स्वतंत्रोत्तर काल में राजकीय अहस्तक्षेप की लहर कमजोर पड़ने लगी और उसके साथ ही मनुष्य के आर्थिक जीवन में राजकीय प्रवेश की सम्भावना बढ़ती गई और परिणाम स्वरूप राजकीय वित्त व्यवस्था का महत्व काफी बढ़ता गया। अतःतुलनात्मकरूप से आधुनिक आर्थिक गतिवियों में प्राचीन आर्थिक अवधारणाओं का समावेश काफी हद तक प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राय सत्या एम0 1983 ई0 भारत में उपनिवेषवाद और राष्ट्रवाद (सं0), पृ0सं0–103, हिन्दी माध्यम कार्यवन्य निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली।
2. चंद्र विपिन भारत का स्वतंत्रता संघर्ष पृ0सं0–14 हि0का0नि0 दिल्ली
3. ताराचंद्र, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, जी0 पृ0सं0–3
4. चन्द्र विपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्श पृ0सं0–14
5. चन्द्र विपिन, वही पृ0सं0–17
6. चन्द्र विपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्श पृ0सं0–14
7. चन्द्र विपिन, वही पृ0सं0–14
8. चन्द्र विपिन, वही पृ0सं0–108
9. चन्द्र विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास हि0का0नि0 दिल्ली पृ0सं0–107

****